Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2587–2591

# COMPARATIVE STUDY OF UPANISHADIC AND MODERN CONTEXTS OF SPIRITUAL INTELLIGENCE

# आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के औपनिषदिक एवं आधुनिक संदर्भों का तुलनात्मक अध्ययन

Km. Divya Arya [1], Shruti Kant Pandey [2], Mohini Arya [3]

[1] Research Scholar, Amity Institute for Sanskrit Studies and Research, Amity University Uttar Pradesh, Noida, India
[2] Guide, Associate Professor, Research Director, Amity Institute for Sanskrit Studies and Research, Amity University Uttar Pradesh, Noida, India
[3] Co-Guide, Associate Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi, India

**Corresponding Author**
Divya Arya,
aryanamrata95@gmail.com

**DOI**
**10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5704**

**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

**Copyright:** © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

## ABSTRACT

**English:** Upanishads are highly respected in the world philosophical community as an inexhaustible repository of spiritual knowledge. Being ancient, these texts have been considered disconnected from modern concepts of spirituality, but through research it has been established that in the Upanishads, not only is the modern context of spiritual intelligence present but it is often found included in some form or the other. Comparative method has been used for the present research. On the basis of available data, information and facts, it is established that the spiritual intelligence expressed in the Upanishads is very practical despite being classical and is at par with modern concepts. On this basis, it can be said that the concepts of spiritual intelligence in the Upanishadic literature are not only in front of modern beliefs, but are also superior to them in many contexts. The study of these texts shows how the tradition of spiritual intelligence is growing from the Upanishads to modernity. The present study helps in understanding the common streams of values, principles, and cultural traditions of human life and also helps in understanding other forms of spirituality.

**Hindi:** आध्यात्मिक ज्ञान के अजस्र भंडार के रूप में उपनिषदों को विश्व दार्शनिक समुदाय में बहुत सम्मान प्राप्त है। प्राचीन होने के कारण इन ग्रंथो को अध्यात्म की आधुनिक संकल्पनाओं से वियुक्त समझा जाता रहा है, किंतु शोध के माध्यम से यह स्थापित किया गया है कि उपनिषदों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता जैसे अधुनातन संदर्भ की न केवल उपस्थित अपितु इसका समावेश प्रायः किसी न किसी रूप में पाया जाता है। प्रस्तुत शोध हेतु तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। उपलब्ध आंकड़ों, सूचनाओं और तथ्यों के आधार पर स्थापित होता है कि उपनिषदों में व्यक्त आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता शास्त्रीय होने पर भी बहुत व्यावहारिक है तथा आधुनिक धारणाओं के समकक्ष है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि उपनिषद कालीन साहित्य में आध्यात्मिक बुद्धिमता की अवधारणाएं आधुनिक मान्यताओं के न केवल समक्ष हैं, अपितु अनेक संदर्भ में उनसे श्रेष्ठ भी हैं। इन ग्रन्थों का अध्ययन बताता है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की परंपरा उपनिषदों से लेकर आधुनिकता तक कैसे बढ़ती जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन मानव जीवन के मूल्यों, सिद्धांतों, और सांस्कृतिक परंपराओं की समान्य धाराओं को समझने में मदद करता है और आध्यात्मिकता के अन्य रूपों को भी समझने में सहायक होता है।

**Keywords:** Spiritual Intelligence, Upanishads, Modernity, Conscience, Self-Realization
आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, उपनिषद, आधुनिकता, अन्तरात्मा, आत्मबोध

## 1. प्रस्तावना

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के उपनिषदिक तथा आधुनिक संदर्भों का तुलनात्मक अध्ययन करना एक महत्वपूर्ण और रोचक विषय है। यह अध्ययन आध्यात्मिक विचारधारा को आधुनिक समय में समझने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन को संतोषप्रद और अंतर्यात्रा की ओर उन्मुख कर

सकता है। उपनिषद महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ हैं, जो भारतीय संस्कृति के मौलिक तत्त्वों को संकलित करते हैं। इन प्रतिष्ठित ग्रन्थों में मनुष्य के असली स्वभाव, जगत का स्वरूप और आत्मा की केंद्रीयता पर विचार किया गया है। उपनिषद आध्यात्मिक कोश के आगार हैं और मनुष्य के अन्तरात्मा के विकास के लिए विभिन्न मार्ग प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक युग में मानव समाज, तकनीकी और वैज्ञानिकता में तेजी से उन्नति कर रहा है। पहले हमें यह समझना महत्वपूर्ण है कि आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का अर्थ क्या है? आध्यात्मिकता अकेले धार्मिक अनुष्ठान या पूजा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के अंतरात्मा के साथ संबंधित है। यह आत्म-जागृति, शांति और ध्यान की प्रक्रिया को व्याख्यायित करता है, जो व्यक्ति को आत्मिक उन्नति और समृद्धि की दिशा में ले जाता है। वर्णित प्रसंग में शोधकर्ता को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि आधुनिक समय में हमारे जीवन के तंत्र कैसे बदल रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से बदलते समय के बीच व्यक्ति के आध्यात्मिक सिद्धांतों को कैसे अद्यतन किया जा सकता है। उपनिषदों में विशेष रूप से अद्वितीय विचारों का आधुनिक संदर्भ में अध्ययन करना आवश्यक है। उनकी शिक्षाओं को आधुनिक जीवन की मानवीय समस्याओं को समझने में कैसे उपयोगी बनाया जा सकता है, यह विचार करने योग्य है। आधुनिक समय में मानवीय संबंधों, सामाजिक अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय परिस्थितियों को समझने में मदद् मिलती है। यह अध्ययन मानव को शांति,समृद्धि, उन्नति और सामाजिक समरसता की दिशा में मार्गदर्शित कर सकता है। जिससे मनुष्य अपने जीवन को और भी गुणवत्तापूर्ण बना सकता है।

## 2. उद्देश्य एवं महत्व

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता आत्मा के साथ जुड़ा होना और अपने आंतरिक प्रकाश को पहचानना है। यह योग्यता मानव जाति को अपने असली स्वरूप को समझने और सत्य की खोज में निरंतर आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान करती है। प्रस्तुत ग्रंथ आत्मा की असीमित सत्यता और मूल्यों की पहचान करते हैं। ध्यान के माध्यम से मन को शांत और आत्मा के अद्वितीयता का अनुभव करने की प्रेरणा देते है तथा मानव जीवन को एक आत्मनिर्भर दिशा में ले जाते हैं। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का महत्व और उद्देश्य उसे व्यक्तिगत स्तर से समझने में मदद करता है। आधुनिक जीवन में लोग तनाव,असंतुलन और अशांति का सामना करते हैं, जो आत्मा के साथ जुड़े स्थिरता की आवश्यकता को जटिल बना देते हैं।

इस प्रकार,आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता उन्हें आत्म-परिचय,शांति और संतुलन की ओर प्रेरित करता है। इसके माध्यम से वे अपने जीवन को आत्म-विकास और सामंजस्य में बदलने के लिए एक नई प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इसका उद्देश्य व्यक्ति के अंतरंग पोषण को समझने और विकसित करने में मदद करना है, ताकि वह एक सत्यान्वेषी, संतुलित और संघर्षरहित जीवन जी सकें तथा स्वयं के साथ, समाज के साथ संबंध स्थापित कर सकें।

## 3. शोध विधि

आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का आधुनिक और औपनिषदिक संदर्भों में तुलनात्मक विधि का उपयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत औपनिषदिक धारणाओं और आधुनिक आत्मज्ञान के उल्लेख में क्या समानताएं हैं यह बताया गया है और सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिकता का अध्ययन भी किया गया है। तत्पश्चात शोध विधि के लिए ऐतिहासिक,तात्त्विक और तकनीकी स्रोतों का उपयोग किया गया है। विभिन्न धार्मिक अवधारणाओं, तत्त्वों और विचारों के बीच समानताएं और विभिन्नताओं का विश्लेषण किया गया है। इसके अलावा, समस्याओं, अविश्वास और विवादास्पद विषयों को परिसंघटित करने और समाधान के लिए विशेष ध्यान भी दिया गया है। इस प्रकार,आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के उपनिषदिक और आधुनिकता का तुलनात्मक विधि के माध्यम से एक संवेदनशील और सूक्ष्म धारणा का अध्ययन किया गया है।

आध्यात्मिक बुद्धिमता की औपनिषदिक धारणाएं : उपनिषद जीवन के गूढ़ रहस्यों और आध्यात्मिक ज्ञान की दिशा प्रदान करता है। उपनिषदों में आध्यात्मिक बुद्धिमता की अवधारणाएं व्यक्ति के भीतर विद्यमान चेतना, ज्ञान और सत्य की खोज पर आधारित हैं। कुछ प्रमुख धारणाओं पर विचार करेंगे:-

- आत्मा और ब्रह्म-उपनिषदों का सबसे केंद्रीय सिद्धांत है, "अहम् ब्रह्मास्मि"[1]और "तत्त्वमसि"[2],जो यह दर्शाता है कि आत्मा और ब्रह्म एक ही हैं। आध्यात्मिक बुद्धिमता आत्मा की इस सार्वभौमिक सत्यता को पहचानने और अनुभव करने में निहित है।
- ज्ञान आधारित जीवन-उपनिषदिक परंपरा में ज्ञान को सर्वोच्च महत्व दिया गया है। यह मान्यता है कि सच्चा ज्ञान ही व्यक्ति को मोक्ष की ओर ले जाता है। विद्या और अविद्या के बीच अंतर समझना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहाँ विद्या व्यक्ति को आत्मज्ञान और मुक्तिपथ की ओर ले जाती है, वहीं अविद्या पतन की ओर।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।

[1] **बृहदारण्यक उपनिषद 1.4.10**

[2] **छान्दोग्य उपनिषद 6.7.8**

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः॥[3]

अविद्या स्पष्ट रूप से अस्तित्व की आध्यात्मिक वास्तविकता के बारे में अज्ञानता है, इसलिए अविद्या में मनुष्य अज्ञानता में रहता है। बल्कि विद्या ज्ञान है, इसलिए विद्या अज्ञान के विरोध में ज्ञान की औपचारिक श्रृखला है। जो लोग अज्ञान की उपासना करते हैं, वे अंधकार में प्रवेश करते हैं और जो ज्ञान में रत रहते हैं, वे मुक्तिपथ की ओर प्रवेश करते हैं। यहाँ स्पष्ट किया गया है कि केवल सांसारिक ज्ञान या भौतिक विज्ञान को ही सब कुछ मान लेना सही नहीं है। सच्चा ज्ञान व्यक्ति को आत्मबोध और अंततः मोक्ष की ओर ले जाता है। उपनिषदों में ज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया गया है क्योंकि यह व्यक्ति को भौतिकता से परे आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करता है।

- माया की प्रत्यभिज्ञा- उपनिषदों में प्रत्यभिज्ञा को भौतिक वास्तविकता का भ्रम बताया गया है। आध्यात्मिक बुद्धिमता का विकास माया के पार जाकर ब्रह्म की सच्ची अनुभूति में है। यह समझना कि संसार की हर वस्तु परिवर्तनशील है और केवल ब्रह्म ही शाश्वत सत्य है, व्यक्ति को मोह-माया से मुक्त करता है।

"नान्तःप्रज्ञं न बहिष्प्रज्ञं नुभयतःप्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्।

अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः॥"[4]

यह न तो बाह्य प्रज्ञा है, न अंतर प्रज्ञा, न ही यह दोनों का सम्मिलन है। यह अनुभव से परे, अव्यवहारी, अव्यक्त, अचिन्तनीय और अद्वितीय है। यह तुरीय अवस्था है जो कि शांति, कल्याण और अद्वैत है। यह आत्मा ही वास्तविकता का परम स्वरूप है।

बाह्य जीवन एवं अंतर्योग में समन्वय- दैनिक जीवन और आंतरिक साधना के बीच संतुलन स्थापित कर इंद्रियों को संयम किया जाता है, जिससे व्यक्ति आत्मा के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकता है। बाह्य जीवन में मनुष्य विभिन्न कर्मों को करता हुआ कई तरह की चुनौतियों का सामना करता है परंतु अंतर योग अर्थात ध्यान प्राणायाम के द्वारा मनुष्य बाह्य जीवन तथा अंतर्योग का समन्वय स्थापित कर सकता है। ध्यान और योग को आत्मा की शुद्धि और आत्म-ज्ञान प्राप्त करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। योग के माध्यम से इंद्रियों और मन का संयम किया जाता है, जिससे व्यक्ति आत्मा के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकता है "सत्यम जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः। येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम्॥"मुण्डकोपनिषद [5] इस मंत्र में सत्य के मार्ग की महिमा का वर्णन है। बाह्य जीवन में सत्य और धर्म का पालन करके ही आत्मिक उन्नति संभव है।

अतःशांति एवं बाह्य शांति- उपनिषदों में अतःशांति और बाह्य शांति को उच्चतम स्थिति मानी गई है। यह स्थिति तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति द्वंद्वों से ऊपर उठकर आत्मा की शाश्वत शांति का अनुभव करता है।

"ॐ सह नाववतु।

सह नौ भुनक्तु।

सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥"[6]

यह मंत्र बताता है कि अतःशांति का अनुभव तब होता है जब हम बाहरी और आंतरिक द्वंद्वों को समाप्त कर देते हैं और स्वयं की आत्मा के सत्य के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। इसमें आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का विकास अहंकार रहित जीवन और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माध्यम से होता है। उपनिषदों में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का महत्व व्यक्ति को अतःशांति एवं बाह्य शांति को समझकर उच्चतम स्थिति में ले जाने में है। यह द्वंद्वों से ऊपर उठने, आत्मा के शाश्वत सत्य को पहचानने और अहंकार के बंधनों से मुक्त होने का मार्ग प्रदान करती है। अतःशांति एवं बाह्य शांति की प्राप्ति तभी संभव है, जब व्यक्ति आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को अपने जीवन में आत्मसात करता है और आत्मा के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

आध्यात्मिक बुद्धिमता की आधुनिक धारणाएं : आध्यात्मिक बुद्धिमता मानवता के अंदर उस अंतर्निहित ज्ञान और जागरूकता का विकास है, जो हमें अपने आत्मा की सम्पूर्णता की ओर ले जाता है। यह धारणा सदियों से हमारे समाज में मौजूद है, लेकिन आधुनिक युग में इसके अर्थ और उपयोग की व्यापकता में काफी परिवर्तन हुआ है। आध्यात्मिक बुद्धिमता की आधुनिक धारणाएं हमें एक सहायक सम्मिलित और संतुष्ट जीवन जीने की दिशा

[3] **ईशोपनिषद् 9**

[4] **माण्डुक्योपनिषद 7**

[5] **मुंडकोपनिषद 3.1.6**

[6] **कठोपनिषद् 2.3.9**

में मार्गदर्शित करती है। इनका अनुसरण करने से हम अपनी आत्मा को पहचानते हैं और उसकी महत्वपूर्णता को समझते हैं। आध्यात्मिक बुद्धिमता का मतलब है मन शरीर और आत्मा के बीच संतुलन की अवधारणा को विकसित करना। आधुनिक युग में आध्यात्मिक बुद्धिमता की धारणाएं विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में बदल गई है। यह शोध आधुनिकता और बुद्धिमत्ता के परिप्रेक्ष्य में इस बदलती धारणाओं का अध्ययन करता है। आध्यात्मिक बुद्धिमता की आधुनिक धारणाएं:

स्वच्छंदता और स्थिरता: आध्यात्मिक बुद्धिमता में स्वच्छंदता और स्थिरता की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह आत्म-जागरूकता और शांति के माध्यम से हमें अपने अंतरात्मा के साथ संपर्क में ले जाता है। स्वच्छंदता आत्म-अन्वेषण और आत्म-जागरूकता को प्रोत्साहित करती है, जिससे व्यक्ति अपने आंतरिक सत्य और आध्यात्मिक अनुभवों को स्वतंत्र रूप से समझ सकता है। दोनों ही तत्व हमें अपने अंतरात्मा के साथ गहरे संपर्क में ले जाते हैं, जिससे जीवन में स्पष्टता और उद्देश्य की भावना उत्पन्न होती है। यह संतुलन हमारी आध्यात्मिक यात्रा को समृद्ध और सार्थक बनाता है।

धार्मिकता एवं वैज्ञानिकता: आधुनिक युग में धार्मिकता के साथ-साथ वैज्ञानिकता और तकनीकी विज्ञान को आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता ने प्रभावित किया है तथा धार्मिक मान्यताओं और अनुष्ठानों को एक व्यक्तिगत अनुभव के रूप में देखने का दृष्टिकोण प्रदान किया है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता धार्मिकता को कट्टरता और रूढ़िवादिता से मुक्त कर समावेशी और सहिष्णु रूप में परिवर्तित करती है। जिससे सामाजिक सौहार्द्र और शांति को बढ़ावा मिलता है। यह विज्ञान और अध्यात्म के बीच एक सेतु का कार्य करती है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता ने वैज्ञानिक समुदाय को यह समझाने में मदद की है कि विज्ञान और आध्यात्मिकता विरोधी नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं। यह दृष्टिकोण अनुसंधान में एक नई गहराई लाता है, जहाँ वैज्ञानिक प्रयासों को मानव कल्याण और नैतिक मूल्यों के साथ जोड़कर देखा जाता है। इसके माध्यम से, मानवता संतुलित समाज की ओर अग्रसर होती है। यह विचारधाराएँ सामाजिक मुद्दों के साथ-साथ व्यक्तिगत और आत्मिक विकास पर भी ध्यान केंद्रित करती है।

योग एवं ध्यान का जीवनचर्या में प्रवेश: आध्यात्मिक बुद्धिमता की एक महत्वपूर्ण धारणा, योग और ध्यान के माध्यम से जीवनचर्या को व्यवस्थित करना । इसके माध्यम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को सुधार तथा आत्मिक अनुभव को विकसित करते हैं। यह धारणा मानव जीवन को संतुलित एवं एकाग्र करती है।

समाज सेवा एवं जीव दया की प्रतिष्ठा: आध्यात्मिक बुद्धिमता की धारणाओं में सेवा और जीव दया का महत्व सामाजिक न्याय और समाज की सेवा को महत्वपूर्ण बनती है। यह धारणा समाज में सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देती है तथा उसे समृद्धि की दिशा में ले जाती है।

आध्यात्मिक बुद्धिमता की व्यवसायिक दृष्टिकोण: व्यावसायिक महत्व न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि सफलता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अध्ययन से अपनी आंतरिक शक्तियों और मूल्यों को पहचानना और उनका उपयोग करना है। जो व्यवसायिक जीवन में संतुलन और समृद्धि ला सकता है। ध्यान और आत्म-चिंतन व्यक्ति को तनाव और चिंता से मुक्त करते हैं, जिससे मानसिक स्पष्टता और रचनात्मकता में वृद्धि होती है और कार्य अधिक केंद्रित होते हैं। इस प्रकार, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता व्यवसाय की सफलता और स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है।

आध्यात्मिक बुद्धिमता की ये आधुनिक धारणाएं हमें एक महत्वपूर्ण और संतुष्ट जीवन जीने की दिशा में प्रेरित करती हैं। यह विश्व के विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक युग में, आध्यात्मिक बुद्धिमता की धारणाएं विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में बदल गई हैं। यह शोध आधुनिक धार्मिकता और बुद्धिमत्ता के परिप्रेक्ष्य में बदलते चिन्तन का अध्ययन करता है। यह धारणाएं समाज में समृद्धि और एकता को बढ़ावा देती हैं और लोगों को उनके आत्मिक और आध्यात्मिक अभिवृद्धि के लिए प्रेरित करती हैं।

“डेविड बी किंग”ने ट्रेंट यूनिवर्सिटी में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता पर शोध किया है, जिसमें वे आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को वास्तविकता के गैर-भौतिक और पारलौकिक पहलुओं पर आधारित अनुकूलित मानसिक क्षमताओं के एक समूह के रूप में परिभाषित करते हैं। उन्होंने आध्यात्मिक बुद्धि की चार मुख्य क्षमताएँ प्रस्तावित की हैं, जैसे आलोचनात्मक, अस्तित्ववादी सोच, व्यक्तिगत अर्थ और उत्पादन। “किसी के अस्तित्व के गैर-भौतिक और पारलौकिक पहलुओं के बारे में जागरूकता, एकीकरण और अनुकूली अनुप्रयोग में योगदान करें, जिससे गहरे अस्तित्व संबंधी प्रतिबिंब, अर्थ की वृद्धि, एक पारलौकिक स्वयं की पहचान और आध्यात्मिक अवस्थाओं में महारत हासिल करने जैसे परिणाम प्राप्त होंगे।"[7]

आध्यात्मिक बुद्धिमता की औपनिषदिक एवं आधुनिक धारणाओं की तुलना: आध्यात्मिक बुद्धिमता की औपनिषदिक एवं आधुनिक धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने से पहले, हमें उपनिषदों के मूल अर्थशास्त्र तथा उसके अन्तर्गत आध्यात्मिक बुद्धिमता को समझने की आवश्यकता होती है। उपनिषदों में विशेष रूप से आत्मा की अनन्तता, ब्रह्म की अद्वितीयता और विश्व के अनन्त रूप की व्याख्या है। ये ग्रंथ संसार की स्थिति, जीवन का उद्देश्य और मनुष्य के अस्तित्व के पर विचार करते हैं, इनका महत्व आज भी अत्यंत उच्च है। उपनिषदों में वर्णित आध्यात्मिक अनुभव और सिद्धांत आज भी लोगों को उत्तेजित करते हैं और उन्हें उनके असली स्वरूप की खोज में मदद करते हैं। आधुनिक संदर्भ में, उपनिषदों की उपयोगिता का विस्तार हुआ है, विशेष रूप से जब धार्मिक और आध्यात्मिक आधारों पर आधारित जीवनशैली के लिए लोग इस दुनिया को अधिक तत्परता से खोज रहे हैं। ध्यान और योग के माध्यम से अपने आत्मा का अन्वेषण, स्वतंत्रता का अनुभव और आत्म-साक्षात्कार आज भी मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता की विचारधार को आधुनिक संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन ज्ञान, ध्यान,

---

[7] **डेविड बी किंग, डेसिस्को टेरेसा एल.2009**

आत्मा की उपेक्षा और जगत के साथ एकता को समझने के रूप में देखा जा सकता है। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को आधुनिक समय में मनोविज्ञान, दार्शनिक विचार, और विज्ञान के साथ जोड़ा गया है । यह अध्ययन आत्म-जागरूकता, शांति और समृद्धि की खोज में मानव जागृति की दिशा को प्रेरित करता है। उपनिषदों में व्यक्त किए गए तत्त्व आधुनिक विज्ञान और तकनीकी उन्नति के साथ कैसे संगत हैं, यह अध्ययन इस प्रकार के प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करता है। इस प्रकार, आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता का विकास और उपनिषदों का महत्त्वपूर्ण योगदान मानव समाज को समृद्धि और उन्नति की दिशा में दिव्यता प्रदान करता है। ''विनीत वी. कुमार'और ''मंजू मेहता' ने बड़े पैमाने पर शोध किया है। निर्माण को क्रियान्वित करते हुए, उन्होंने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को "स्वयं' को समझकर और उच्च स्तर की अंतरात्मा, करुणा और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के द्वारा जीवन को सामाजिक रूप व्यक्ति की क्षमता के रूप में परिभाषित किया"।आधुनिक समाज में आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्य- मानसिक शांति, और वैज्ञानिक गतिविधियों के साथ संतुलन स्थापित कर सकता है। जिससे हमारे समाज को समृद्ध, स्थिर, और समर्थ बनाने के लिए अधिक सक्षम बनाया जा सकता है।

## 4. निष्कर्ष

औपनिषदिक धारणाएं व्यक्ति को आंतरिक शांति, ज्ञान और आत्मा की गहराइयों में उतरने का मार्ग प्रदान करती हैं। ये सिद्धांत केवल बौद्धिक रूप से नहीं बल्कि अनुभव के माध्यम से आत्मसात किए जाने चाहिए, जिससे व्यक्ति अपनी वास्तविकता को समझकर एक समृद्ध और अर्थपूर्ण जीवन जी सके। आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के सिद्धांतों का आधुनिक समय में उपयोग इस प्रकार है कि वे लोगों को सकारात्मक और संतोषप्रद जीवन जीने के लिए प्रभावित करते हैं। उपनिषदों में वर्णित आध्यात्मिक सिद्धांतों का अध्ययन करने से व्यक्ति अपने जीवन को उत्तम बनाने के लिए नई दिशा में आगे बढ़ सकता है तथा आधुनिक समय में ध्यान और योग के अभ्यास की गुणवत्ता बढ़ रही है। इसके माध्यम से लोग अपने मानसिक स्वास्थ्य को सुधारते हैं और आत्मा के साथ संपर्क में रहते हैं। उपनिषदों के तत्वों का विश्लेषण करते समय स्पष्ट होता है कि केवल धार्मिक उद्देश्यों की बात नहीं है, बल्कि मानवता के मूल्यों और जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र में सत्य की खोज की बात है। इन ग्रन्थों में उद्धृत सिद्धांतों को आधुनिक जीवनशैली में अपनाकर मानव अपने जीवन को समृद्धि, शांति और संतोष से भर सकते हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


छान्दोग्य उपनिषद, सानुवाद शंकर भाष्य सहित, गीताप्रेस गोरखपुर, 2052 संस्करण।

बृहदारण्यकोपनिषद् शंकर भाष्यसहित, गीताप्रेस गोरखपुर, 2058 संस्करण।

कठोपनिषद, गीताप्रेस गोरखपुर, 2000 संस्करण।

मुंडकोपनिषद, गीता प्रेस गोरखपु, 2000 संस्करण।

चिन्मयानंद स्वामी, ईशावास्योपनिषद, चिनमय प्रकाशन, मुंबई 2013।

ईशादि नौ उपनिषद् शांकर भाष्य, गीताप्रेस गोरखपु, संवत 2067।

द्विवेदी कपिल देव, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, विश्व भारतीय अनुसंधान परिषद शांति निकेतन, ज्ञानपुर भदोही उत्तर प्रदेश, संस्करण 2017।

डेविड बी किंग, डेसिस्को टेरेसा एल. 'आध्यात्मिक बुद्धिमता का एक व्यवहारि मॉडल और स्वर रिपोर्ट उपाय' ट्रांसपर्सनल स्टडीज के अंतरराष्ट्रीय जनरल 2009

Danah Zohar and IAN Marshall, Spiritual Intelligence- the ultimate intelligence, Bloomsbury Publishing India Private,1 January 2001.